विद्यालयों में भूगोल की शिक्षा के बदलते आयाम

अपर्णा पाण्डेय*

विद्यालयों में भूगोल की शिक्षा को विश्व के बदलते सामाजिक-आर्थिक परिदृश्य में परखने की आवश्यकता है। भौगोलिक ज्ञान के साथ-साथ भौगोलिक कुशलता का विकास भूगोल की गुणवत्तापरक शिक्षा का मूल है। सूचना क्राँति के इस दौर में सूचनाओं का अपार भंडार मौजूद है। अतः विद्यार्थियों को इस योग्य बनाना कि मात्र सूचनाओं का एकत्रीकरण ही भूगोल का ध्येय नहीं है, अपितु इस प्राप्त भौगोलिक ज्ञान का उपयोग अपने वास्तविक जीवन में बुद्धिमत्तापूर्वक नयी परिस्थितियों में कैसे कर सकते हैं, यही हमारी भौगोलिक कुशलता का परिचायक है। *राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा–2005* भी विद्यालयों में भूगोल के इसी जीवंत अध्ययन-अध्यापन के वातावरण को बनाने पर ज़ोर देती है।

वर्तमान परिप्रेक्ष्य में शिक्षा के मौलिक अधिकार के तहत जहाँ विद्यार्थियों की शत-प्रतिशत उपस्थिति दर्ज कराने की बात हो रही है वहीं विद्यालयों में प्रवेश की इस दर के साथ-साथ गुणवत्तापरक शिक्षा भी समाज के सामने एक चुनौती बन कर उभरी है। बच्चों को विद्यालय की समयावधि में चारदीवारी में बंद रखने से ही हमारे कर्तव्य की इतिश्री नहीं हो जाती। केंद्र तथा राज्य सरकारों द्वारा शिक्षा प्रोत्साहन योजना के अंतर्गत अनेक योजनाएँ चलाई जा रही हैं, जिनका उद्देश्य न केवल विद्यार्थियों को विद्यालयों तक पहुँचाना है बल्कि उनका सम्यक विकास करना भी है।

वर्तमान भारतीय विद्यालयी शिक्षा के परिदृश्य में देखें तो आज का शिक्षक अनेक शैक्षणिक/विद्यालयी ज़िम्मेदारियों को सँभालते हुए इतने कठोर तथा दृढ़ टाइमटेबल, जिसमें ज़रा भी लचीलापन नहीं है, के साथ-साथ वर्ष पर्यंत होने वाली परीक्षा पर आधारित शिक्षा प्रणाली में अपने आपको जकड़ा हुआ महसूस करता है। कभी-कभी ऐसा लगता है कि हम अपने आपको ऐसी कठोर-दिनचर्या से अलग कर लें और अपने आपसे पूछें कि हम किसी विषय विशेष की शिक्षा आखिर क्यों दे रहे हैं? अगर हम भूगोल का ही

* *एसोसिएट प्रोफ़ेसर* (भूगोल), सामाजिक विज्ञान शिक्षा विभाग, एन.सी.ई.आर.टी., नयी दिल्ली

उदाहरण लें कि भूगोल की शिक्षा के ज़रिए हम विद्यार्थियों को क्या सिखाना चाहते हैं? ऐसे प्रश्न हमें अपने लक्ष्य का पुनरीक्षण करने में मदद करते हैं। साथ ही इससे यह भी मार्गदर्शन मिलता है कि हम अपने विचारों को पाठ्यचर्या, विषय-सामग्री तथा उपागम के परिप्रेक्ष्य में कैसे प्रयोगधर्मी बना सकते हैं? हमारे लिए विद्यार्थी खास महत्त्व रखते हैं। जब हम तथ्यों और परीक्षा की बातें भूल जाते हैं तो हमारे लिए विद्यार्थियों के गुण, उनकी अभिरुचि तथा संकल्पनात्मक शक्ति ही मायने रखती है। तब हमारे सामने एक शिक्षक के तौर पर मुख्य उद्देश्य होता है कि हमारे विद्यार्थियों का व्यक्तित्व-विकास कैसे हो, जिससे वे समाज में एक ज़िम्मेदार नागरिक का कर्तव्य निभा सकें।

भूगोल शिक्षण के माध्यम से विद्यार्थियों के व्यक्तिगत विकास के त्रिस्तरीय कदम

1. भूगोल की गहन जानकारी तथा व्यक्तिगत विकास कैसे हो? इसके लिए क्षेत्र-अध्ययन (Field Work), समस्या-समाधान का कौशल तथा भौगोलिक तथ्यों की खोज में सक्रिय भागीदारी अति आवश्यक है।
2. भौगोलिक कुशलता तथा नयी तकनीकों को विभिन्न स्तरों पर विद्यार्थियों द्वारा धीरे-धीरे अपनाना, जिसमें भूगोल को भविष्य में वे एक प्रोफेशनल तौर पर प्रयोग कर सकें।
3. भूगोल में उन विषयों और मुद्दों का समावेश करना, जो समाज के लिए विशेष महत्त्व रखते हैं।

यह कहा जाता है कि विश्व को कैसे समझें? यह कोई पढ़ा नहीं सकता। भूगोल ही एक ऐसा विषय है जो पूरे विश्व को एक कथन के अंदर समाहित कर देता है। भूगोल शिक्षण के ज़रिए हम इसे पढ़ा भी सकते हैं और पढ़ाया जाना भी चाहिए। इसके साथ ही हमें इस वास्तविकता को भी स्वीकार करना होगा कि समस्या यह नहीं है कि विद्यालयों में भूगोल के अंतर्गत क्या पढ़ाया जाए? अपितु सबसे बड़ी समस्या है कि उन चुने गए विषयों को किस रूप में विद्यार्थियों के सामने प्रस्तुत किया जाए और किन बातों पर कितना ज़ोर दिया जाना चाहिए। इस बात पर भी ध्यान देना आवश्यक है कि विषय का चुनाव विद्यार्थियों की उम्र को ध्यान में रखकर हो और वह विषय विद्यार्थियों के जीवन के मुद्दों से जुड़ा भी हो। इससे जीवन की उन समस्याओं का हल विद्यार्थियों को अपने विषय में ही मिल जाएगा। अगर ऐसा होता है तभी भूगोल की शिक्षा के द्वारा हम एक ज़िम्मेदार, जानकार तथा दूरदर्शी नागरिक बनाने में समाज का सहयोग कर सकते हैं।

व्यक्तिगत विकास तब होता है जब हम ऐसे क्रियाकलाप में संलग्न होते हैं और हमारे सामने सीखने की ऐसी स्थितियाँ उत्पन्न होती हैं कि हम उनसे अपने आपको अलग नहीं रख पाते। इसमें सबसे महत्वपूर्ण है समूह कार्य, जिसमें विद्यार्थियों का आपसी संबंध, दूसरे सहयोगियों के बारे में जानकारी प्राप्त करना, दूसरों की रुचियों, संस्कृति की प्रशंसा करने से विद्यार्थियों के अपने व्यक्तित्व का विकास होता है। उन्हें अपने आपको दूसरों की परिस्थितियों में रखकर समझने का मौका मिलता है।

ज़्यादातर विद्यार्थियों के लिए विद्यालय से बाहर की दुनिया ही वास्तविक दुनिया है। ऐसे में विद्यालय का बाहरी दुनिया से शायद ही कोई संबंध होता है। कभी-कभी तो कुछ विद्यार्थी बाहरी दुनिया के लोगों से इतना डरे हुए होते हैं

कि वे पढ़ाई-लिखाई की शरण लेना ज़्यादा उचित समझते हैं। यह बहुत ही अच्छा प्रयास होगा यदि भूगोल विषय का शिक्षण ही उनको सामाजिक रूप से मिलने-जुलने का अनुभव कराए तथा वास्तविक जीवन की समस्याओं से उबरने का अवसर प्रदान करे न कि बाहरी दुनिया की केवल ज़्यादा से ज़्यादा जानकारी बटोरने का अवसर। इस प्रकार के मौके विद्यार्थियों को अपने आस-पास की जगहों पर क्षेत्र अध्ययन के द्वारा प्रदान किए जा सकते हैं।

जहाँ तक भूगोल के पाठ्यक्रम का सवाल है सन् 1975 से 1988 तक की पाठ्यचर्या में भूगोल का पाठ्यक्रम प्रादेशिक उपागम पर आधारित था, जिससे विश्व के विभिन्न महाद्वीपों और उसमें स्थित कुछ चयनित देशों का विस्तारपूर्वक वर्णन किया गया था। यह विवरण रोचक तो था, इसमें तनिक भी संदेह नहीं है लेकिन अपार सूचनाओं से पूरित वर्णन इस प्रकार दिए गए थे कि जिसके बारे में रिपोर्ट शिक्षा बिना बोझ के (1993) कहती है कि *"कक्षा छः से आठ तक प्रादेशिक भूगोल के अंतर्गत विश्व के सभी महाद्वीपों का अध्ययन समाहित था।" (पृ. 12)*

अतः इन महाद्वीपों, वहाँ के निवासियों के बारे में उनके रहन-सहन, जीवनयापन पर विचार करने की बात तो छोड़ ही दी जानी चाहिए। उनको समझना भी इतना आसान नहीं था। यह रिपोर्ट इस बात पर भी बल देती है कि भूगोल में समकालीन वास्तविकताओं का अध्ययन शामिल किया जाना चाहिए (पृ. 20)। जिसको ध्यान में रखते हुए विद्यालयों हेतु *राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा-2005* में माध्यमिक स्तर पर जो सामान्य शिक्षा के अंतर्गत आता है, भूगोल में समकालीन भारत जैसे विषय को चुना गया। जिसमें कक्षा 9वीं तथा 10वीं में भारत के प्राकृतिक तथा भौतिक विभाजन तथा जनसंख्या का अध्ययन और संसाधनों का विकास शामिल है। प्राकृतिक वनों का अध्ययन करते समय विशेष ध्यान दिया गया है। विद्यार्थियों को वन के प्रकारों के बारे में अवश्य जानकारी मिलनी चाहिए लेकिन इसके साथ-साथ अपने देश के उन निवासियों के बारे में जानकारी मिलनी चाहिए जिनका जीवन इन वनों की छोटी-छोटी उपजों पर आधारित है। सिर्फ़ तथ्यात्मक विवरण द्वारा ही नहीं अपितु चित्रों तथा क्रियाकलापों के माध्यम से विद्यार्थियों में यहाँ जागरूकता उत्पन्न की जानी चाहिए कि ऐसी जानकारी हमें अपने समाज से संवेदनात्मक जुड़ाव बनाए रखने में सहायक होती है।

भारत एक विविधताओं वाला देश है सिर्फ़ भाषा और रहन-सहन के मामले में ही नहीं बल्कि भौगोलिक रूप से विश्व में पाई जाने वाली प्रत्येक प्रकार की जलवायु तथा वनस्पतियाँ यहाँ मिलती हैं। भारत में सैकड़ों छोटी-बड़ी नदियाँ हैं। राष्ट्रीय स्तर पर बनी पुस्तकों में भारत की सभी नदियों तथा उनकी सहायक नदियों को मानचित्र पर दर्शाना संभव नहीं होता। अतः शिक्षक से यह अपेक्षा की जाती है कि वह अपने क्षेत्र के मानचित्र से विद्यार्थियों को परिचित कराए तथा इनका संबंध प्रादेशिक, राष्ट्रीय तथा अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर प्रदर्शित करे। यही भौगोलिक अध्ययन का महत्वपूर्ण अंग होता है कि किसी भी विषय की स्थानीय स्तर से वैश्विक स्तर पर प्रासंगिकता को स्थापित करना।

भारत के प्राकृतिक संसाधनों को पढ़ाने का उद्देश्य यही है कि विद्यार्थी भारत की प्रकृति को

समग्र रूप से समझें और साथ ही साथ अपने प्रदेश की गूढ़ जानकारी प्रादेशिक उपागम के ज़रिए विस्तार से प्राप्त करें। भारत से संबंधित तथ्य दिए जाने का आशय यह है कि विद्यार्थी देश के विकास की वास्तविक और संभावित दोनों ही स्थितियों को समझ सकें और साथ ही देश की तकनीकी क्षमता का ठीक-ठीक आकलन कर सकें।

इस प्रकार की जानकारी देने का विशेष महत्त्व यह होता है कि विद्यार्थियों को विस्तृत परिप्रेक्ष्य में यह देखने का मौका मिलता है कि किसी देश को विकसित स्थिति तक पहुँचने के लिए किन-किन अवस्थाओं से होकर गुज़रना पड़ता है। भावी नागरिकों को यह समझना ज़रूरी है कि किसी देश के प्राकृतिक संसाधनों का बुद्धिमत्तापूर्वक उपयोग वहाँ के लोगों के तकनीकी विकास पर ही निर्भर करता है। केंट, एशले (2000) का भी कहना है कि *"पाठ्यपुस्तकें उस समाज का प्रतिबिंब होती हैं जहाँ वह निर्मित होती हैं। चाहे वे पुस्तकें विज्ञान, गणित या सामाजिक विज्ञान की हों, समाज की संस्कृति, लोकाचार, तकनीकी विकास सब कुछ पाठ्यपुस्तकों में सुस्पष्ट रूप से परिलक्षित होता है।"*

राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा – 2005 विद्यार्थियों को पाठ्यपुस्तकों की परिधि से बाहर निकलकर जानकारी के अन्य स्रोतों को जानने की बात करती है। इन तमाम जानकारियों के स्रोतों के प्रति विद्यार्थियों को उत्साहित किया जाना चाहिए तथा साथ ही यत्र-तत्र बिखरी जानकारी को भलीभाँति कैसे एकत्र करें, इसके बारे में विद्यार्थियों को अवगत कराया जाना चाहिए।

भौगोलिक ज्ञान के साथ-साथ भौगोलिक कुशलता का विकास-भौगोलिक कुशलता को मुख्य रूप से पाँच भागों में बाँटा जा सकता है –

1. ***भौगोलिक प्रश्न पूछना***- भूगोल के अध्ययन के साथ ही विद्यार्थियों में यह समझ विकसित होनी चाहिए कि कोई प्रश्न भूगोल से संबंधित है या नहीं। अगर प्रश्न स्थानिक रूप से जुड़ा हुआ है तभी वह भौगोलिक प्रश्न की श्रेणी में आएगा, जैसे किसी स्थान का जनसंख्या घनत्व कितना है? इसमें स्थान विशेष रूप से महत्वपूर्ण है। अत: यह भौगोलिक प्रश्न है। इसी प्रकार यदि प्रश्न है कि आज के सामाजिक परिदृश्य में कामगार स्त्रियों की दशा कैसी है? यदि यह प्रश्न किसी विशेष स्थान से जुड़ा हुआ नहीं है तो यह सामाजिक-आर्थिक पहलू से संबंधित है भूगोल से नहीं।
2. ***भौगोलिक सूचनाएँ एकत्र करना***- विद्यार्थियों में ऐसी कुशलता विकसित होनी चाहिए कि किसी भी तथ्य की जानकारी हमें किन-किन स्रोतों से प्राप्त हो सकती है, जैसे – जनसंख्या संबंधी आँकड़े, भारत की जनगणना (Census of India) से, खगोलीय जानकारी के लिए नासा (NASA) की वेबसाइट से। सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि जानकारी के सही स्रोत मालूम होने चाहिए जिसमें सुस्पष्ट सूचना एकत्र की जा सके। अन्यथा आज की सूचना क्राँति के युग में विद्यार्थी सही जानकारी की खोज में भटक सकता है। पाठ्यपुस्तकों की दुनिया से निकलकर पत्र-पत्रिकाएँ, शोध पत्र में छपी जानकारी विद्यार्थियों के लिए नयी जानकारी के प्रेरणा स्रोत होते हैं।

3. ***भौगोलिक तथ्य/सूचनाएँ एकत्र करना***– आज के युग में सूचनाएँ अपार हैं, इसलिए उनको एकत्र करना ही भौगोलिक कुशलता का परिचायक नहीं है, अपितु विद्यार्थी उन सूचनाओं को किस प्रकार संगठित करता है। हर तथ्य को अलग-अलग करना, उनका चुनाव, आँकड़ों को श्रेणीबद्ध करना ही भौगोलिक कुशलता के अंतर्गत आते हैं।

4. ***भौगोलिक तथ्यों/सूचनाओं का विश्लेषण***– सभी भौगोलिक तथ्यों का संकलन तथा संयोजन करने के उपरांत ही उनका विश्लेषण किया जा सकता है। इस विश्लेषण की कला के अंतर्गत तथ्यों की व्याख्या, विवरण, विवेचना, आलोचनात्मक विचार की प्रक्रियाएँ सम्मिलित होती हैं। भौगोलिक ज्ञान की इस अवस्था तक आने के साथ ही विद्यार्थियों में यह जिज्ञासा अवश्य उत्पन्न होनी चाहिए कि कोई भी तथ्य क्यों है? इसके कारण क्या हैं? इसके साथ ही साथ एक ही तथ्य को विभिन्न परिप्रेक्ष्य में रखकर भी विश्लेषित किया जा सकता है। इन सभी पायदानों से गुज़रने के साथ ही उसमें भौगोलिक विश्लेषण की कला विकसित हो सकती है।

5. ***भौगोलिक प्रश्नों का उत्तर प्रस्तुत करना***– किसी भी भौगोलिक प्रश्न का उत्तर प्रस्तुत करने के लिए किस प्रकार मानचित्रों, रेखाचित्रों, फोटोग्राफ्स का प्रयोग किया गया है, यह विद्यार्थी की भौगोलिक कुशलता का परिचायक है। यदि उत्तर विस्तृत रूप से निबंध के रूप में दिया जाना है तब भी वह संप्रेषणीय हो तथा सरल भाषा में होना चाहिए। कठिन शब्दावली का प्रयोग भाषा को बोझिल बना देता है। यद्यपि हर विषय की अपनी एक भाषा होती है, कुछ तकनीकी शब्द होते हैं जिनका प्रयोग विषय-विशेष के लिए अनिवार्य होता है।

इंटरनेशनल ज्यॉग्राफिकल यूनियन के अनुसार- "भूगोल वह विज्ञान है जो किसी स्थान की विशेषता बताता है। इसके साथ ही पृथ्वी के धरातल पर विघटित होने वाली घटनाओं, उनका विकास तथा जनसंख्या के वितरण के संबंध में विवेचना करता है। मानव वातावरण के बीच होने वाली अंतर्क्रियाएँ जो किसी स्थान विशेष पर होती हैं, भूगोल उससे संबंधित है।" इंटरनेशनल चार्टर ऑन ज्यॉग्राफिकल एजुकेशन(1992)

भौगोलिक ज्ञान तथा कुशलता की प्राप्ति के पश्चात् भूगोल का एक विद्यार्थी कुछ इस प्रकार से प्रश्नों को जानने की इच्छा रखता है कि-

यह अमुक स्थान कहाँ है?

यह किसकी तरह है?

यह वहाँ क्यों है?

यह घटना कैसे घटित हुई?

इस घटना का क्या असर है?

भौगोलिक कुशलता उसे इन सभी प्रश्नों का उत्तर ढूँढ़ने में सहायक होती है। क्योंकि इन सभी प्रश्नों का उत्तर भौगोलिक ज्ञान जिसमें धरती के स्थान, स्थिति, अंतर्क्रिया, स्थानिक वितरण और घटनाओं की विभिन्नता शामिल है, उसमें समाहित होता है। धीरे-धीरे विद्यार्थी इस बात को समझने लगते हैं कि वर्तमान परिस्थितियों की व्याख्या का स्रोत ऐतिहासिक तथा समकालीन तथ्य दोनों

ही होते हैं। वर्तमान परिस्थितियों की प्रकृति को पहचाना जा सकता है और वही भविष्य के संभावित विकास को इंगित करता है। भूगोल के शिक्षण का यही उद्देश्य है कि विद्यार्थियों को योग्य बनाना जिसमें वे अपने भौगोलिक ज्ञान का उपयोग नयी परिस्थितियों में सही प्रकार से कर सकें।

संदर्भ

एन.सी.ई.आर.टी. *राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा* – 1975, 1988, 2000, 2005, नयी दिल्ली

एम.एच.आर.डी. 1993. *शिक्षा बिना बोझ के, नयी दिल्ली इंटरनेशनल ज्यॉग्राफ़िकल यूनियन. 1992. इंटरनेशनल चार्टर ऑन ज्यॉग्राफ़िकल एजुकेशन*

केंट, एशले. एड. 2000. रिफ़्लेक्टिव प्रैक्टिस इन ज्यॉग्राफ़ी टीचिंग. पॉल चैपमैन पब्लिशिंग, लंदन

डेवलेपमेंट्स इन ज्यॉग्राफ़ी. 1964. पेपर्स फ़्रॉम कॉन्फ्रेंस फ़ॉर सेकेंडरी स्कूल टीचर्स. मॉरे हाउस पब्लिकेशन, एडिनबर्ग, ग्रेट ब्रिटेन